लड़का और बूढ़ा तीरंदाज

चित्र - शुद्धसत्व बसु

बहुत साल पहले की बात है। एक गाँव में राद नामक एक छोटा लड़का रहता था। वह एक दिन विश्व का महानतम तीरंदाज़ बनना चाहता था।

वह जहाँ रहता था, वहाँ हर साल तीरंदाज़ी की प्रतियोगिता होती थी। इसमें हिस्सा लेने के लिए दूर-दूर से तीरंदाज़ आया करते थे। प्रतियोगिता जीतने वाले को सोने की एक गेंद इनाम में दी जाती थी। वर्षों से तूफान नाम का एक माहिर तीरंदाज़ यह प्रतियोगिता जीतता आ रहा था। कोई भी उसके सामने टिक नहीं पाता था। कस्बे का हर बच्चा चाहता था कि बड़ा होकर वह भी तूफान की ही तरह होनहार तीरंदाज़ बने। राद ने तो मानो कसम ही खा ली थी कि वह तूफान को टक्कर ज़रूर देगा। लेकिन कैसे, यह वह भी नहीं जानता था। तूफान से टकराना आसान नहीं था। लगभग असम्भव-सा था यह।

हर साल की तरह इस साल भी तूफान तीरंदाज़ी प्रतियोगिता का खिताब अपने नाम कर चुका था। वहाँ उपस्थित सभी लोग उसकी जीत की खुशी में मग्न थे। अचानक एक अनजान मुसाफिर वहाँ आया। वह किसी दूर देश से आया था। उसने लोगों को बताया कि तूफान से भी बड़ा एक तीरंदाज़ और है। हालाँकि अब वह बूढ़ा हो चला है। वह निशानेबाज़ी में इतना माहिर है कि पाँच सौ कदम दूर से भी किसी पेड़ की छोटी-सी पत्ती को बेध सकता है। उसके सिखाए तीरंदाज़ अलग-अलग जगहों पर नाम कमा रहे हैं। यह सुनकर राद की जिज्ञासा उस बूढ़े तीरंदाज़ के प्रति बढ़ गई। वह भीड़ से निकलकर उस मुसाफिर के पास पहुँचा। "आप कहाँ से आए हैं महोदय?" राद ने पूछा।

"मैं खोतान (आज चीन का होतान) प्रदेश से आया हूँ।" मुसाफिर बोला।

"उस बुज़ुर्ग तीरंदाज़ का नाम क्या है?" राद ने पूछा।

"उसका नाम नसीम है।" मुसाफिर बोला।

यह सुनकर राद अपने घर लौट गया। वह सारी रात बूढ़े तीरंदाज़ नसीम के बारे में ही सोचता रहा। उसके चेहरे पर एड्ड चमक आ गई थी। उसने फैसला कर लिया कि वह नसीम से तीरंदाज़ी सीखने खोतान ज़रूर जाएगा।

अगली सुबह एक कपड़े में कुछ रोटियाँ बाँधकर और छागल (पानी रखने का चमड़े का थैला) में पानी रखकर राद अपनी मंज़िल की ओर निकल पड़ा। लेकिन खोतान कोई बहुत पास तो था नहीं। सात दिन और सात रातों तक वह चलता रहा। उसने कई पहाड़ियाँ लाँघीं। रेगिस्तानों से गुज़रा। कई नदियाँ पार कीं। कभी गर्म तपते दिन थे तो कभी सर्द रातें, लेकिन वह नहीं डिगा। दुनिया का महानतम तीरंदाज़ बनने की इच्छा के आगे ये मुसीबतें उसे बहुत छोटी नज़र आ रही थीं। वह चलता रहा, चलता रहा। आखिरकार, वह अपनी मंज़िल खोतान पहुँच ही गया।

शहर में प्रवेश करते ही राद ने वहाँ के लोगों से नसीम के बारे में पूछा। पता चला कि वह शहर के बाहरी इलाके में एक छोटे-से खेत में रहता है।

लगातार चलते रहने से राद काफी थक चुका था। उसके पैर भी ज़ख्मी हो गए थे। वह चल पाने की स्थिति में बिल्कुल नहीं था। फिर भी हिम्मत जुटाकर वह नसीम के खेत की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर देखा कि एक दुबला-पतला बूढ़ा आदमी चूज़ों को दाने डाल रहा था। उसकी सफेद रंग की लम्बी दाढ़ी थी। राद हैरान था। उसने सोचा था कि नसीम एक बहुत लम्बा-चौड़ा और ताकतवर आदमी होगा, लेकिन यह क्या...! राद ने आगे बढ़कर उसका अभिवादन किया। नसीम ने राद की ओर देखते हुए अभिवादन का जवाब दिया और चूज़ों को दाने डालना जारी रखा।

राद ने धीरे-से पूछा, "क्या आप महान तीरंदाज़ नसीम हैं?"

"हाँ, मेरा ही नाम नसीम है।"

"मैं बड़ी दूर से, बड़ी मुश्किलों से आप से` आया तीरंदाज़ी सीखने आया हूँ।" राद ने कहा।

नसीम ने उस छोटे-से बालक को ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा, "बहुत कम लोग तीरंदाज़ी में दिलचस्पी रखते हैं। इस क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए कड़े अभ्यास और परिश्रम की आवश्यकता होती है। अभी तो यह तुम्हारी शुरुआत भर है। तीरंदाज़ी में तो इससे भी कहीं ज़्यादा मेहनत की ज़रूरत होगी।"

"मैं हर कठिनाई का सामना करने के लिए तैयार हूँ। लेकिन मैंने केवल सुन रखा है कि आप बहुत बड़े तीरंदाज़ हैं। मैं आपकी बातों पर कैसे यकीन करूँ? आपके महारथी होने का कोई प्रमाण मिल जाए तो मैं भी आपको अपना गुरू मान लूँगा।" राद ने कहा।

उसकी बात सुनकर नसीम मुस्कराते हुए बोला, "तुम बहुत ही चालाक लड़के हो। ठीक है, अगर तुम कोई प्रमाण चाहते तो लो अभी दिखाता हूँ।" कहते हुए नसीम अपनी झोपड़ी में गया और एक पुराना-सा धनुष और कुछ बाण ले आया।

धनुष की डोरी पर एक तीर रखा और डोरी खींच दी। तीर सीधा आसमान की ओर निकल पड़ा। इसके तुरन्त बाद उसने दूसरा तीर छोड़ा जिसने पहले वाले तीर का पीछा करके उसके दो फाड़ कर दिए। इसके बाद तीसरा तीर उसकी कमान से निकला जिसने दूसरे तीर को दो फाड़ कर दिया। ऐसा करते हुए उसने एक के बाद एक दस तीर चलाए। राद हक्का-बक्का था।

"क्या अब तुम सन्तुष्ट हो?" नसीम ने धनुष को ज़मीन पर रखते हुए पूछा।

रखते हुए पूछा।

"हाँ, गुरुजी।" उसका सिर नसीम के कदमों में झुक गया। "अब आप मुझे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार कीजिए।" राद ने अनुरोध किया।

फिर तत्काल बोला, "लेकिन गुरुजी, मेरे पास आपको देने के लिए एक भी पैसा नहीं है।"

"मैं अपने शिष्यों से कुछ भी नहीं लेता। हाँ, अगर तुम चाहो तो मुझे खेती करने में मदद कर सकते हो।" नसीम बोला।

राद को और क्या चाहिए था! उसने तुरन्त हामी भर दी। फिर बोला, "क्या हम अभी से प्रशिक्षण शुरू कर सकते हैं?"

"नहीं, अभी तुम थके हो। तुम्हें आराम की ज़रूरत है। हम कल से शुरू करेंगे।" नसीम ने कहा।

अगले दिन राद जब वहाँ पहुँचा तो नसीम बोला, "मैं तुम्हें तीरंदाज़ी सिखाऊँ, इससे पहले तुम्हें तीन परीक्षाएँ देनी होंगी।"

"मैं हर परीक्षा के

के लिए तैयार हूँ।" राद बोला।

"तो सुनो, पहली परीक्षा – तुम्हें अपनी आँखें इस तरह से बना लेनी हैं कि तुम्हारी पलकें तुम्हारी मर्ज़ी से ही झपकें। तुम जब तक चाहो, आँखें खुली रख सको।"

नसीम राद को एक नदी किनारे ले गया। वहाँ एक पनचक्की चल रही थी। चारों ओर का शोर मानो कानों को बेध रहा था। नसीम ने राद से एक पत्थर पर बैठने को कहा। फिर बोला, "जिस दिन तुम इतने शोरगुल में भी अपनी पलकें सुबह से शाम तक खुली रख सकोगे, समझ लेना तुमने पहली परीक्षा पास कर ली है। इसके बाद मैं तुम्हें दूसरी परीक्षा के बारे में बताऊँगा।"

उस बूढ़े तीरंदाज़ के खेत में काम करने के बाद राद रोज़ नदी किनारे बैठकर पलकें खुली रखने का अभ्यास करने लगा। कहना जितना आसान था, करना उतना ही मुश्किल। लेकिन राद तो अच्छा तीरंदाज़ बनने

का संकल्प ले चुका था। इसलिए वह अभ्यास में जुट गया। दिन, हफ्ते, महीने बीत गए। शुरू में थोड़ा मुश्किल लगा, लेकिन धीरे-धीरे उसका अभ्यास बढ़ता गया। और अन्त में, वह ऐसी स्थिति में आ गया जब वह सुबह से शाम तक अपनी आँखें खुली रख सकता था।

अब दूसरी परीक्षा की बारी थी। यह परीक्षा कल्पनाशक्ति को लेकर थी। नसीम उसे एक गाय के पास ले गया। गाय पर एक कीड़ा बैठा हुआ था। नसीम ने राद से कहा, "गाय की पीठ पर जो कीड़ा बैठा है, उसे तुम दो कदम से ज़्यादा दूरी से नहीं देख सकते। उसके आकार के बारे में सोचो। जिस दिन तुम्हारी कल्पना में तुम्हें यह कीड़ा एक भेड़ के बराबर दिखने लगेगा, उस दिन तुम दूसरी परीक्षा भी पास कर लोगे।"

अगले दिन राद मैदान में चर रही एक गाय के पास पहुँचा। ध्यान से देखने पर उसकी पीठ पर एक कीड़ा नज़र आया। वह इतना छोटा था कि उसे देखकर उसकी आँखों में दर्द होने लगा। लेकिन राद हार मानने वालों में से नहीं था। उसे तो एक महान तीरंदाज़ बनना था। इसलिए वह दूसरी परीक्षा में सफल होने में जुट गया। वह रोज़ कीड़े को देखने का अभ्यास करने लगा। जल्द ही उसे वह बड़ा दिखाई देने लगा। तीन महीने में कीड़ा एक चूज़े के बराबर दिखने लगा था और अब वह उसे 20 कदम दूर से भी देख सकता था। एक साल के बाद उसे वह कीड़ा भेड़ के बराबर दिखने लगा और अब वह उसे कई मीटर दूर से देख सकता था।

राद ने इस बारे में नसीम को बताया। नसीम बड़ा खुश हुआ। बोला, "बच्चे, बहुत अच्छे। तुम दूसरी परीक्षा में भी सफल हो गए हो। अब तीसरी और आखरी परीक्षा बची है। इसमें तुम्हें बड़ी चीज़ों को जितना सम्भव हो सके, छोटे आकार में देखना है।"

राद यह सुनकर हैरान रह गया। पर, महान तीरंदाज़ बनने के लिए इस परीक्षा में भी सफल होना ही था।

नसीम बोला, "फिर से गायों के पास जाओ। उन्हें तब तक देखते रहो, जब तक कि वे चूज़े के आकार की नज़र न आने लगें।"

खेती के सामान्य काम निपटाने के बाद वह रोज़ गायों को छोटे आकार में देखने का अभ्यास करने लगा। हमेशा की तरह शुरू में यह काम उसे मुश्किल लगा। लेकिन दो साल में उसे गाएँ इतनी छोटी नज़र आने लगीं मानो वे चूज़े हों। गायों के पास खड़े होने पर उसे लगता कहीं वे

उसके पैरों के नीचे आकर कुचली ही न जाएँ।

अपनी इस प्रगति के बारे में राद ने नसीम को बताया। वह बहुत खुश हुआ। और राद की पीठ थपथपाते हुए बोला, "बहुत बढ़िया। अब तुम एक होशियार और कुशल तीरंदाज़ बन गए हो।"

यह सुनकर राद अचरज से बोला, "लेकिन गुरुजी, मैंने तो एक भी तीर नहीं छोड़ा है। फिर मैं तीरंदाज़ कैसे बन सकता हूँ?"

"यह सच है कि मैंने तुम्हें तीर छोड़ना नहीं सिखाया है, लेकिन तुममें वे सारे गुण विकसित हो गए हैं, जो एक अच्छे तीरंदाज़ में होने चाहिए।" फिर नसीम ने उसे धनुष-बाण लाने को कहा। राद तुरन्त झोपड़ी में जाकर धनुष-बाण ले आया। तब तक नसीम अपनी झोपड़ी पर एक पत्ती चिपका चुका था। उसने राद को पत्ती पर निशाना लगाने का कहा। राद ने दूर जाकर झोपड़ी और नसीम की ओर देखा। वे बहुत ही छोटे नज़र आ रहे थे। पत्ती तो दिखाई भी नहीं दे रही थी। उसने अपने लक्ष्य पर ध्यान लगाया। थोड़ी ही देर में पत्ती उसे इतनी बड़ी दिखने लगी मानो वह एक हाथ की दूरी पर हो। राद ने धनुष पर बाण चढ़ाया और लक्ष्य की ओर निशाना साध दिया। तीर सीधे लक्ष्य को भेदता हुआ निकल गया।

राद ने इसे इतनी आसानी व कुशलता से कर लिया था कि उसे भी भरोसा हो गया कि वह किसी भी लक्ष्य को भेद सकता है।

राद बहुत खुश था। आखिर वह एक कुशल तीरंदाज़ बन चुका था। उसने झुककर नसीम का शुक्रिया अदा किया। नसीम ने कहा, "मैंने कुछ नहीं किया। जो भी किया, तुमने ही किया है। तुम्हारे दृढ़ संकल्प ने किया है।"

नसीम ने राद को अपना धनुष-बाण देकर वहाँ से विदा किया। लम्बी दूरी तय करके जब राद अपने घर पहुँचा तो वहाँ तीरंदाज़ी प्रतियोगिता होने ही वाली थी। वह भी उसमें शामिल हो गया। हर बार की तरह लोग इस बार भी तूफान के ही जीतने की उम्मीदें लगाए थे।

गाँव के बीच चौक में प्रतियोगिता शुरू हुई। राद और तूफान दोनों ने अपने प्रतिस्पर्धियों को हरा दिया। अन्तिम मुकाबला राद और तूफान के बीच था। इसके लिए एक पेड़ पर एक पत्ती को लक्ष्य तय किया गया। दोनों को पाँच सौ कदम दूर से उस लक्ष्य को भेदना था।

दोनों खड़े हो गए। डील-डौल में राद तूफान के आगे एकदम बच्चा लग रहा था। पहला मौका तूफान को दिया गया। उसने धनुष उठाया और पत्ती को बेध दिया। वहाँ जमा लोग करतल ध्वनि करने लगे। तूफान भी खुशी के मारे गरजने लगा।

अब राद की बारी थी। उसे लक्ष्य बिल्कुल साफ नज़र आ रहा था। पत्ती को बीच से बेधा हुआ तूफान का तीर भी उसे दिखाई दे रहा था। उसने तूफान के उस तीर को बेधते हुए पत्ती पर निशाना

लगाना तय किया। राद ने धनुष पर बाण चढ़ाया, डोरी खींची। बाण छोड़ने के पहले उसने अपने आसपास नज़र दौड़ाई। लोग दम साधे उसके निशाने का इन्तज़ार कर रहे थे। उसने पास खड़े तूफान की ओर देखा। लेकिन यह क्या...! उसे तूफान का आकार घटता नज़र आया। धीरे-धीरे वह और छोटा, और छोटा होता गया। अब तूफान उसे एक चूज़े की तरह दिखाई दे रहा था जिसे वह आगे बढ़कर कुचल सकता था। राद ने सोचा, "इतने छोटे से आदमी से क्या प्रतिस्पर्धा करना!" उसने अपना धनुष झुका दिया और चौक से बाहर निकल आया। लोगों में खलबली मच गई। कुछ लोग कहने लगे कि राद निशाना चूकने के डर से मैदान छोड़कर भाग निकला है। लेकिन राद को इसकी बिल्कुल परवाह नहीं थी। उसके लिए प्रतियोगिता जीतना अब महत्वपूर्ण नहीं रह गया था।

कहा जाता है कि कई सालों के बाद राद ने अपना वह धनुष-बाण एक युवक को सौंप दिया जो उसके पास तीरंदाज़ी सीखने आया था।